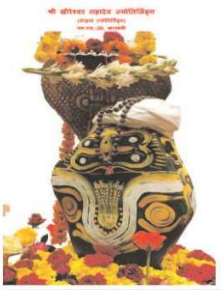

दैनिक
राष्ट्रीय प्रस्तावना
गाँव से गवर्नेन्स तक
लखनऊ, रायबरेली, इलाहाबाद,आजमगढ़, झांसी, एटा,औरैया, अमेठी,बलरामपुर, फतेहपुर, बांदा, उनाव, लखीमपुर, मुरादाबाद, कन्नौज, बाराबंकी, सीतापुर,जौनपुर,श्रावस्ती,उरई,जालौन, फिरोजाबाद,हरदोई, मथुरा,कानपुर,ललितपुर, गोण्डा, सहारनपुर,सिद्धार्थनगर,सन्तकबीरनगर, नोयडा सहित प्रदेश के समस्त क्षेत्रों में बहुप्रसारित
वर्ष : 9 अंक 225 लखनऊ, रविवार ,01 मार्च, 2020 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2.00

अबकी बार ठण्ड अप्रैल २०२० तक जाने की उम्मीद

डॉ0 भरत राज सिंह,
महानिदेशक-तकनीकी,
स्कूल आफ मैनेजमेंट
साइंसेज, लखनऊ

पिछले वर्ष भारतवर्ष में नवम्बर / दिसंबर 2019 मे मौसम विभाग के मुताबिक पश्चिम से होने वाले डिस्टरबेंस की वजह से उत्तर भारत में विशेष रूप से कश्मीर घाटी / हिमाँचल में भारी वर्फवारी हुई और पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से मैदानी इलाको में शीत लहर चली 7 इसके साथ ही, यदि हवा का रुख उत्तरी हो तो यहां ठंड पड़ती है।

विगत 15 नवम्बर / दिसम्बर 2019 को पहाड़ों पर बर्फबारी, एव्लांच और भीषण बारिश के कहर से ठंड के साथ शीतलहर ने भी आमजनों की कठिनाई बढ़ा दी थी और मैदानी इलाकों में भी पहाड़ो पर हो रही बर्फबारी का असर दिल्ली-एनसीआर मे कड़ाके की सर्दी के कारण दिखाई दिया और कश्मीर प्रसिद्ध डल झील समेत सभी जलस्त्रोत व नल आंशिक तौर पर जम गए हैं व राजस्थान के माउंट आबू झील भी जम गई थी । इसी बीच उत्तराखंड में हुई बर्फबारी और बारिश के बाद पहाड़ से लेकर मैदान तक सर्दी का प्रकोप बढ़ गया और मैदानों इलाको में जबरदस्त कोहरा पसरा रहा। हिमांचल जबरदस्त बर्फबारी का आलम रहा 7 धर्मशाला, डलहौजी, चंबा, खजियार, कुल्लू और कसौली में कई बार अव्लान्च के कारण जनजीवन सिकुड़ कर कमरों में बंद हो गया 7 इन इलाकों में सड़कें बंद पड़ी हुई हैं, जिससे दैनिक उपयोग की वस्तुओं की आपूर्ति भी नहीं हो पा रही थी । चंबा जिले में 26 सड़कों पर यातायात बहाल नहीं होने में बिसो दिन लग गए । वहीं बिजली आपूर्ति ठप पड़ी हुई थी। तापमान (-) 8-10 डिग्री सेंटीग्रेड तक गिर गया 7 यहाँ तक कि सड़क पर वर्फ का बड़ा टुकड़ा 10 फीट ऊँचा हिस्सा सड़क पर खिसता नजर आया जिससे सड़क पर चल रहे ट्रकों को छोड़कर वाहन चालक भाग खड़े हुए 7

शिमला मे अव्लांच (15 जनवरी 2020)

सर्द हवा की ठिठुरन व कोहरे से उत्तरी भारत का अधिकाँशतर हिस्सा हरिद्वार से लेकर दिल्ली, लखनऊ जौनपुर व वाराणसी तक चपेट में रहा । मैदानी इलाको में जैसे लखनऊ में तापमान 0.1 डिग्री सेंटीग्रेड तक पंहुच गया था, कई जगह नल के पानी जम गए ।

इसी के साथ एक और भयावह स्थिति है कि देश के 91 प्रमुख जलाशयों का जल स्तर लगातार गिर रहा है, इनकी जल संचयन क्षमता दिसम्बर 2019 मे 62त्न हो गई है, जो नवम्बर 2019 के अंतिम सप्ताह तक 64त्न थी । पानी नवम्बर 2019 के अंतिम सप्ताह 101.77 अरब घनमीटर था, जो दिसम्बर 2019 मे घट कर 98.57 अरब गहन मीटर रह गया है। पिछले साल की तुलना में इन जलाशयों में इस समय तक पानी का स्तर काफी कम है। बीते वर्ष इस समय इनमे 96त्न जल संचय था. इन जलाशयों की कुल क्षमता 157.799 अरब घनमीटर है। पूरे देश में हुई कम बारिश के कारण, इन जलाशयों में शुरू से ही कम जल संचय हुआ है। पर्याप्त वर्षा के न होने और लगातार दोहन के चलते आने वाले दिनों में पानी की किल्लत होना संभावित है । इस वर्ष देश के सम्पूर्ण तटीय क्षेत्रो में भीषण वारिश हुई नतीजन उड़ीसा, कर्नाटक, आँध्रप्रदेश, महाराष्ट्र व गुजरात के तटीय क्षेत्र के शहरों में जन-जीवन महीनो अस्त-व्यस्त रहा ।

यही नहीं पुरे विश्व में अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, चीन , कोरिया , ऑस्ट्रेलिया व जापान आदि में सुनामी की प्रकोप तथा अति वृष्टि, वर्फवारी आदि से सम्पूर्ण जन-जीवन त्राहिमाम हो चुका है ङ्क्या कभी हमने सोचा यह क्यों हो रहा है 7 हां, पिछले शताब्दी से स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ रही थी, परन्तु विगत दो-तीन दशको से इसमे अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। इसका मुख्यकारण है, मनुष्य द्वारा पकृति से की गयी छेड़-छाड़ तथा पेड़ो को अप्रत्याशित ढंग से काटना और वाहनों व औद्योगिकीकरण का बढ़ना 7 आज ध्रुवो व पहाड़ो पर जमी वर्फ पिघलकर शुन्य की तरफ पहुँचने के कगार पर है । आने वाले चार-पांच दशको में दुनिया में वर्फीले क्षेत्र न के बराबर दिखाई पड़ेगे । जलवायु परिवर्तन जिस तेजी हो रहा है, सभी ॠतुओ मे परिवर्तन हो रहा है और स्थानीय मौसम मे यह अप्रत्यासित हो रहा है कि कब वारिस हो जायेगी, कब कोहरा या वर्फ पडने लगेगी या अतिवृष्टि की सम्भावना है, मौसम विभाग बताने मे सक्षम नही हो पा रहा है ।

फ्रांस मे बाढ (अक्टूबर 2019)

अभी कल ही मौसम विज्ञान विभाग, भारत सरकार के द्वारा यह बताया गया कि पचिमोत्तर, पस्चिम, मध्य और दक्षिण भारत के इलाको में मार्च, अप्रैल व मई के महीनो में सामान्य से अधिक गर्मी पडने की उम्मीद है, जिसमे लू व हीट-वैव का प्रकोप रहेगा तथा तापमान में भी 43 प्रतिशत बढोत्तरी की सम्भावना जताई है । मेरा मानना है कि प्रत्येक वर्ष वैश्विक तापमान में बढोत्तरी से ध्रुवो व अन्य पहाडी इलाको के ग्लेसिअर से वर्फीली चट्टाने तेजी से पिघल रही है और इसके असर से समुद्र का पानी बढ रहा है और सतह के फैलाव से वाष्पीकरण की प्रक्रिया में भी तेजी आती जा रही है । अधिकान्श वाष्प पृथ्वी के सतह 8-10 किलोमीटर ऊचाई पर यह वाष्प पृथ्वी के चारो तरफ इकट्ठा हो रही है ।

जब भी कोई स्थानीय क्षेत्रो में मौसम में हल-चल होती है तो या तो वादल हो जाते है या वारिश अथवा ओले पडने लगते है ।

यह स्थिति मैदानी भाग हो या रेगिस्तान कही भी पाया जा रहा है । मेरे अनुमान के अनुसार इस वर्ष पुनः मौसम का मिजाज बदलता रहेगा और ठंडक का असर मार्च व अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक कम से कम दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, मध्य प्रदेश का कुछ भाग व बिहार का कछरी भाग में बना रहेगा और छुट-पुट वारिश की सम्भावना बनी रहेगी ।

यही नही गर्मी इस वर्ष पिचले साल के अपेक्षा 0.5 से लगभग 1 डिग्री तक अधिक बढ सकती है और लू के थपेडे अप्रैल, मई व जून के द्वितीय सप्ताह तक देखने को मिलेगा । अब जलवायु परिवर्तन मे बढोत्तरी से बारिश तथा ठंड 9-10 माह से अधिक समय तक रहेगी और भीषण गर्मी मात्र दो-ढाई माह तक ही सिमटेगी ।